।। अथ बचन को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ बचन को अंग लिखंते ||

|| कवत ||

बचना नाही मोल || तोल सो माप न आवे ||
जो जाणे कोई बोल || ब्रम्ह के मांय मिलावे ||
बायक बिष ऊतार || बचन सें सोदा कीजे ||
बेटा बेटी ब्याव || परण घर भेळा लिजे ||
बचना सूं अवतार || बफ धर राकस माऱ्या ||
जन सुखिया मन सोच रे || बचन संत ऊधाऱ्या || १ ||

वचन अनमोल है उसका कोई तोल मोल नहीं है । यदि कोई सतगुरु के ज्ञान को पुर्ण जानता है तो उस ज्ञान को धारण करने वालों को सतस्वरुप ब्रम्ह पद की प्राप्ती हो जाती है । वचनो से बोलकर याने झाडा देकर विष उतार देते है,कोई भी सौदा वचनो से होता है,वचनोसे लड्का लड्की की ब्याव शादी होती है । वचनो में बंधकर ही अवतार आते है व राक्षसो को मारते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे मन तुं सोच,वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है । ||१||

बचना बंधे न्हार || बीर सो मूठ चळावे ||
बचना के बस जरख || दोड़ म्हेरी पें आवे ||
बचना तारा तोड़ || आण जमी पर मेले ||
नाटक चेटक सीख || नटग्र बाजीग्र खेले ||
बचना हारे जीत || बचन सूं मन उपाई ||
बायक सूं सुखराम के || अटळ ध्रु बेठा जाई || २ ||

सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चलाते है । वचन के वश होकर जरख दौड्कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड्कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । मन के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैठे है । ||२||

हिये तराजु तोल || मोल कर बायर लावे ||
गोतो कदे न खाय || बेण पाछो नही आवे ||
प्रदेसाँ प्रभोम || ज्हाँ तहाँ सब ही माने ||
भरी सभा के बिच || ताय की बात बखाणे ||
मोलस तोलस नांय || बचन की कहाँ बडाई ||
जन सुखिया मन सोच || बचन कहीये मुख लाई || ३ ||

अपने वचनोको हृदय के तराजु मे तोलकर फिर बोलना चाहिये । जो वचनोको तोलकर

बोलता है वो कभी गोता नही खाते है क्यो की बोले हुये वचन वापीस नही आते है । अच्छे वचन वालो की परदेश के भुमी पर भी सब जगह बात मानते है और भरी सभा मे भी ऐसे व्यक्ति के वचनो की बात दृष्टांत के रुप मे बखाण करते है और जो वचनोको तोल मोल कर नही बोलते है उनके वचनोकी कोई बढाई नही करते है । इसलीये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मन मे सोचकर फिर मुख से वचन निकालने चाहिये । ।।३।।

मंत्र के बस देव ।। सेव सूं आन मिले हे ।।
डाकण सरस सलेस ।। बिष बासक को जैहे ।।
न्हारी दे नित दुध ।। आय खुंटे से बंधे ।।
मंत्र के बस भूत ।। आण धोरा नित संधे ।।
पवन पाणी धरत्री ।। सब मंत्र बस होय ।।
तो हर मंतर सुखराम के ।। क्यूँ राम मिले नी तोय ।। ४ ।।

मंत्रो के वश मे देवता है वे सेवा करनेसे आकर मिलते । मंत्रो से ही डाकण,सरस,सलेस व सांप का जहर उतरता है । सिंहनी मंत्रो के वश मे होकर खुंटे से बंध जाती है व दुध देती है । भुत भी मंत्र के वश मे होकर काम करने लग जाते है । परन.पानी,धरती सब मंत्रो के वश मे है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की परमात्मा नाम ही मंत्र है तो उसका जप करने से रामजी क्यो नही मिलेगे । ।।४।।

सो मण अन की प्रख ।। बानगी मांहि दिखावे ।।
अकल बुद्ध नर मांय ।। बचन अेकण मे पावे ।।
सस्तर कीसूं सुण मूठ ।। बाण अेकी जो छूटा ।।
सिध मंतर सुण जाप ।। जाब नेकी रिध खूटां ।।
युँ हरजन की पारखा ।। सबद एक के माँय ।।
अगम बात सुखराम के ।। आण पटके लाय ।। ५ ।।

सैकडो मण अन्न की परीक्षा नमुने से होती है । मनुष्य मे कितनी अकल व बुद्धि है उसकी परीक्षा वचन बोलने मे हो जाती है । तलवार की परीक्षा मुठ से होती है । बांण की परीक्षा एक ही बार छोडने से होती है । सिध की भी मंत्र की साधना से ही सिद्धि होती है । ऐसे ही संतो की परीक्षा वचन से हो जाती है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जो तीन लोको से परे अगम देश के पद की बात बताते है वे सतस्वरुपी संत है । ।।५।।

।। इति बचन को अंग संपूरण ।।